ECONSPEAK: A Journal of Advances in Management IT & Social Sciences,
Vol. 10, Issue 8, August 2020 Impact Factor 6.569 ISSN: (2231-4571)
www.skirec.org Email Id: skirec.org@gmail.com

काजीवरम रेशम का रोमांस

नवीन चन्द्र शर्मा

सहायक शिक्षक

गाँधी स्मारक हाई स्कूल गोह (औरंगाबाद)

काजीवरम रेशम न सिर्फ विविध चटख रंगो के लिए प्रसिद्व है बल्कि इससे बनने वाली साड़िया की डिजायन भी उतनी ही लोकप्रिय है जो उस स्थान के भव्य मंदिरो से प्रेरित होती है जहाँ से काजीवरम रेशम आता है । काजीवरम साड़ियो का रेशम वस्तुतः काजीपुरम से आता हैं। जहाँ कभी पल्लव शासको का शासन था।

काजीपुरम चेन्नई से 72 किलोमिटर दुर स्थित है। इसे काची भी कहा जाता है। यह भारत के प्राचीनतम शहरो में से एक है। छठी शताब्दी के बाद काजीपुरम पल्लव शासको की राजधानी हुआ करती थी यह शहर व्यापार और हिंदु तथा बौध धर्म के ज्ञान एवं शिक्षा का भी महत्वपुर्ण केन्द्र था। ह्वेनसांग के अनुसार यह शहर 6 मिल की परिधी में फैला हुआ था। और यहाँ के लोक काफी बहादुर थें पल्लवो के बाद यहॉ चोल,पाण्डया, विजय नगर सम्राज्य तथा अंग्रेजो का भी शासन हुआ इन सभी शासको के काल में काजींवरम रेशम का उद्ययोग फलता फुलता रहा ।

काजीवरम रेशम के साथ एक लोक कथा जुडी हुई है। इस लोक कथा के अनुसार काजीवरम रेशम की बुनाई करने वाले बुनकर दरअसल मारकणेडय ऋषी के वंशज

है। जो देवताओ के प्रमुख बुनकर थें और जिन्होने कमल के महिन रोये से कपडे की बुनाई की थी लेकिन इतिहास से हमें कुछ और ही जानकारी मिलती है।

विद्यानो के अनुसार पल्लव शासको के बाद आये चोल वंश के शासन के दौरान काजीवरम रेशम उद्योग स्थापित हुआ था। ऐसा माना जाता है कि राजा चोल प्रथम ने सन् 985–1014 के बीच करघे लगाने के लिए गुजरात के सौराष्ट से बड़ी संख्या में बुनकरो को मिलाकर यहॉ बसाया गया था लेकिन तब रेशम की बुनाई स्थानीय स्तर पर होती थी। और बहुत छोटे पैमाने पर साडियो का निर्माण होता था ।

वास्तम में काजीवरम रेशम उद्योग का सही विकास विजय नगर के प्रसिद्व शासक कृष्णदेव राय के शासन काल में (1509–1529) में ही हो पाया। इस काल में आंध्रप्रदेश के बुनकर समुदाय देवांग और शालिगर कृश्णदेव राय के सम्राज्य में आकर बस गये थें । प्रवास कि दुसरी लहर के साथ आये बुनकरो की वजह से काजी की पुरानी रेशम की परम्परा में नई महारत, नई डिजाईन और नई तकनीक शमिल हो गई जिससे यह उद्योग नई उचाँई पर पहुँच गया।

सैकड़ो सालो के बाद यह उद्योग तब समाप्ती के कगार पर पहुँच गया जब 18वी सदी में अंग्रेजो और फ्रांसिसीयो के बीच कारोमंडल तट पर कब्जे के लिए युद्व छिड़ गये इसें इतिहास में कर्नाटक युद्व के नाम से जाना जाता है। इस युद्व के दौरान फ्रांस ने इस शहर को जला डाला था।

जिससे रेशम उद्योग को काफी नुकसान उठाना पड़ा लेकिन अंग्रेजो की जित के बाद शांति काल में यह उद्योग एक बार फिर उठ खड़ा हुआ जिसके बाद आज तक इसकी चमक बरकरार है।

रेशम की कांजी वरम साडिया खालीस रेशम से बनाई जाती है। इसे मलवरी भी कहते है। इस पर सोने चादी की जरी का भी काम होता है। जो इसकी खास विशेषता होती है। हालाकि बुनाई का काम तमिलनाडु के काजीपुरम में होता है। लेकिन रेशम कर्नाटक और जरी गुजरात के सुरत से मगवाई जाती है।

2005 में भारत सरकार ने कांजीवरम रेशम की मान्यता देते हुए इसे भौगोलिक संकेत (टैग) प्रदान किया जिससे इस उद्योग को नकल से बचाया जा सके । यह टैग पारम्परिक तकनिक द्वारा तकनिक द्वारा विशेष डिजाईन और बुनाई को मान्यता प्रदान करता है। यह टैग मिलने के बाद इस रेशम का उत्पादन सिर्फ उसी जगह हो सकता है जहाँ मुल रुप से इसकी उत्पति होती है। आज इस उद्योग से 30 हजार से भी ज्यादा लोग जुडे हुए है।

नवीन चंद्र शर्मा